दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता, न उसमें उपन्यास की भाँति सभी रसों का सम्मिश्रण होता है। वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल, बूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने संयुक्त रूप में दृष्टिगोचर होता है।"

पात्र—उपन्यासों में पात्र-संख्या पर कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं है, उसमें बहुसंख्यक पात्र हो सकते हैं क्योंकि उसमें पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए विस्तृत क्षेत्र होता है।

कहानी में पात्रों की संख्या सीमित रहती है, यदा-कदा तो एक ही पात्र रहता है, (किन्तु सामान्यतया तीन-चार तक) क्योंकि पात्र की अधिकता होने पर उनके चरित्र का विकास का असम्भव हो जायेगा और कहानी की प्रभावशाली एक-निष्ठता भी समाप्त हो जायेगी।

उपन्यास की अधिकारिक कथा कथा एक नायक होता है तथा अनेक प्रासङ्गिक कथाओं के अनेक नायक हो सकते हैं। किन्तु कहानी प्रासङ्गिक कथाओं के अभाव में सह-नायकों का प्रश्न ही नही रहता है। उपन्यास के पात्र और नायक कुछ स्वतंत्रता प्राप्त होते हैं जबकि कहानी के पात्र पर कहानीकार का अंकुश रहता है।

उपन्यास एवं कहानी में मानव जीवन से सम्बद्ध किसी भी श्रेणी के पात्र आ सकते हैं। चरित्र-चित्रण-प्रधान उपन्यास एवं कहानी दोनों ही हो सकते हैं किन्तु उपन्यास में इसके लिए अधिक अवसर एवं अवकाश होता है। कहानी में चरित्र की झलक होती है, उपन्यास में विस्तृत झाँकी। कहानी में प्रायः प्रत्यक्ष तथा अभिनयात्मक चरित्र-चित्रण प्रणाली का प्रयोग होता है, उपन्यास में परोक्ष अभिनयात्मक विकसित प्रणाली का सहारा लिया जाता है।

कथोपकथन—कहानी के लघु आकार के कारण उसमें कथोपकथन संक्षिप्त, सशक्त, व्यञ्जनापूर्ण, सार्थक एवं मार्मिक होने चाहिए, तभी कहानीकार की सफलता सम्भव है। कथोपकथन ही कहानी लेखक की अग्नि-परीक्षा है।

उपन्यास एवं कहानी में नाटकीयता का आनन्द इसी तत्व से सम्भव है। वैसे कहानी वर्णनात्मक भी सम्भव है किन्तु यह शैली उत्तम नहीं होती।

उपन्यास का क्षेत्र विस्तृत होता है, अतः लेखक विश्लेषण एवं वर्णन दोनों के लिये स्वतन्त्र होता है। अतः हम कह सकते हैं कि उपन्यासकार के कथोपकथन संक्षिप्त एवं विस्तृत दोनों प्रकार के हो सकते हैं किन्तु कहानी में संक्षिप्त कथोपकथन ही अपेक्षित हैं।

देशकाल—इस तत्त्व से परे न उपन्यास जा सकता है और न कहानी। साहित्य समाज का दर्पण है, अतः कोई साहित्य इस तत्त्व से निरपेक्ष नहीं हो सकता। इस तत्त्व का निर्वाह सफल कहानीकार एवं उपन्यासकार दोनों ही करते हैं। यह तत्त्व कहानी एवं उपान्यास दोनों के समान रूप से महत्वपूर्ण है किन्तु उपन्यास में युग का विस्तृत चित्र मिलता है तथा कहानी में संक्षिप्त झलक।

शैली—शैली की दृष्टि से ये दोनों विधाएँ परस्पर भिन्न हैं, यद्यपि वर्ण्य-विषय प्रायः समान होते हैं। कहानी की शैली व्यंजना-प्रधान होती है। 'गागर में सागर' की लोकोक्ति इसी विधा पर पूर्णतः चरितार्थ होती है। श्री प्रेमचन्द ने एक

Scanned with CamScanner

स्थान पर लिखा है कि—"हम कहानी ऐसी चाहते हैं कि वह थोड़े शब्दों में कही जा सके। उसमें एक वाक्य, एक शब्द भी अनावश्यक न आने पावे। उसका पहला ही वाक्य मन को आकर्षित कर ले और अन्त तक मुग्ध किये रहे···।" कहानी का एक लक्ष्य स्पष्ट होने के कारण उसकी शैली में कसावट, ठोसपन और संक्षिप्तता अनिवार्य रूप से रहते हैं। इसके विरुद्ध उपन्यास में ध्येय की एकता के अभाव में शैली में न तो संक्षिप्तता ही होती है और न संकोच; उसमें विस्तार की, विवरण की विवरण की प्रवृत्ति होती है।"

संक्षेप में डॉ० भागीरथ मिश्र के अनुसार इन दोनों विधाओं का अन्तर इस प्रकार है।

कहानी	उपन्यास
(१) कहानी जीवन की एक झलक मात्र प्रस्तुत करती है	(१) उपन्यास सम्पूर्ण जीवन का विशाल और व्यापक चित्र उपस्थित करता है।
(२) कहानीकार के लिए संक्षिप्तता और संकेतात्मकता आवश्यक है।	(२) उपन्यासकार के लिए विवरण पूर्ण, विशद और व्याख्यापूर्ण शैली आवश्यक है।
(३) कहानीकार एक भाव या प्रभाव विशेष का चित्रण करता है।	(३) उपन्यास पूरी परिस्थिति और गतिशील जीवन की निवृत्ति करता है।
(४) कहानी में प्रासंगिक कथाओं का अवसर नहीं होता।	(४) उपन्यास में प्रासंगिक कथाओं का संगठन, अधिकारिक कथा की एकरसता को दूर करने तथा वर्णन में विविधता लाने के लिए आवश्यक होता है।
(५) कहानी में थोड़े समय में महत्त्वपूर्ण बात कहानी होती है। अतः कला की सूक्ष्मता इसमें आवश्यक होती है। कहानी कलात्मक अधिक होती है। वह एक भाव विशेष का ही चित्रण करने का प्रयत्न करती है	(५) उपन्यास में सूक्ष्मकला की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी व्यापक उदात्त दृष्टिकोण तथा भाव, रस और परिस्थिति के समग्र रूप में चित्रण की। रस के विविध रूपों का समावेश उपन्यास में हो सकता है।
(६) कहानी द्वारा हल्का मनोरंजन ही प्रायः सम्पादित हो पाता है।	(६) उपन्यास परिस्थिति और पात्र के पूर्ण चित्रण द्वारा हृदयमंथन और मन संस्कार भी करता है।

अन्त में हम निष्कर्ष रूप में यह कह सकते हैं कि कहानी तथा उपन्यास नामक साहित्य की इन दो विधाओं में केवल आकार का ही अन्तर नहीं है, उसमें शिल्प-विधान की दृष्टि से भी मौलिक अन्तर है। डॉ० जगन्नाथ शर्मा ने इनके अन्तर को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि—"थोड़े में यदि कहानी और उपन्यास का तारतम्य निरूपण करना हो तो कहा जा सकता है कि कहानी यदि अपने एकोन्मुख समष्टि प्रभाव के माध्यम से हमारे चित्त को पूर्णतया झंकृत और आन्दोलित करके हमें अनुमान, कल्पना और जिज्ञासा के उन्मुक्त द्वार पर ला खड़ा करती है तो उपन्यास जीवन के विविध क्षेत्रों की झाँकी देकर सारे रहस्यों और वस्तुस्थितियों से परिचित कराकर

Scanned with CamScanner

हमारे भीतर एक पूर्णता विधायक संतुष्टि उत्पन्न कर देता है।''आशय स्पष्ट है कि उपन्यास में पाठक सब कुछ पढ़ता है और आनन्द लेता है, जबकि कहानी में पाठक बहुत कुछ अपनी कल्पना के सहारे आनन्दानुभव करता है। निश्चय ही कहानी उपन्यास का न तो छोटा रूप है और न उनका सम्बन्ध पिता और पुत्री का है वरन् वह उससे सर्वथा स्वतन्त्र और भिन्न रचना है। बेरी के मतानुसार 'उपन्यास एक तृप्ति है और कहानी एक उभार'—The novel is a satisfaction, the short story is a stimulus. निश्चय ही कहानी जीवन का एक अंश है और उपन्यास सम्पूर्ण जीवन का चित्र।